



• वर्ष-विंशति (20) • अंक 03 • मूल्य : ₹ 10 • वार्षिक मूल्य : ₹ 120





आयुध निर्माणी चांदा में रक्तदान शिविर का आयोजन दिनांक 04 मार्च, 2023 को किया गया।
भारतीय सुरक्षा कर्मचारी संघ को 'रक्त मित्र' की उपाधि से सम्मानित किया गया।



ए. आर. डी. ई. मजदूर संघ पुणे की ओर से 'महिला दिवस' के अवसर पर दिनांक 9 मार्च, 2023
रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।



दिनांक 8 मार्च 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर जिला कार्यालय पुणे में
महिला कार्यकर्ताओं का स्वागत कर स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये।

सम्पादक की कलम से



मित्रों

आप सभी को भारतीय नववर्ष संवत्सर 2080 की हार्दिक शुभकामनाएं। जैसा कि आप सभी को विदित है कि कई राज्य सरकारों ने NPS को समाप्त कर OPS लागू किया है।

भारतीय मजदूर संघ, सरकारी कर्मचारी राष्ट्रीय परिसंघ, भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ, भारतीय रेलवे मजदूर संघ, पोस्टल इम्प्लॉईज फेडरेशन, राष्ट्रीय राज्य कर्मचारी महासंघ, स्वायत्तशासी कर्मचारी महासंघ, GSI कर्मचारी संगठन, ASI कर्मचारी संगठन, सर्वे ऑफ इंडिया तथा अन्य केंद्र और राज्य कर्मचारियों के द्वारा समय-समय पर आंदोलन चलाकर तथा कई बार सरकार के मंत्रियों से वार्ता करके NPS को समाप्त करने और OPS को लागू करने की मांग उठाई जाती रही है। केंद्र सरकार से समय समय पर वार्ता करके NPS में कुछ संशोधन भी कराये गये। जैसे –

1. NPS के अंतर्गत ग्रेच्युटी की व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया था। जिसे सरकारी कर्मचारी राष्ट्रीय परिसंघ ने वर्ष 2015 में तत्कालीन वित्त मंत्री स्व० अरुण जेटली जी के साथ तर्कसंगत वार्ता करके NPS के अंतर्गत ग्रेच्युटी प्रदान करने का आदेश कराया।

2. मृतक कर्मचारियों के आश्रितों को पारिवारिक पेंशन के लिये पुरानी व्यवस्था अर्थात् CCS Pension Rules 1972 प्रदान कराने हेतु ऑप्शन की व्यवस्था कराई।

3. लगातार पुरानी पेंशन लागू कराने हेतु प्रदेशों की राजधानियों में धरना-प्रदर्शन, रैली करके माननीय राज्यपाल महोदय के माध्यम से ज्ञापन प्रेषित किये। नई दिल्ली में जंतर मंतर पर रैली की एवं माननीय अटल जी की समाधि पर रैली करके OPS लागू करने हेतु आन्दोलन किया। भारत सरकार ने आंदोलनों के बाद एक बड़ा संशोधन किया जिसमें सरकार ने 10 प्रतिशत के स्थान पर अपना शेयर 14 प्रतिशत तक बढ़ाया।

4. जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि न्यू पेंशन के लिये जो फण्ड कटता है उससे विड्रॉल नहीं कर सकते थे। उस व्यवस्था में परिवर्तन कराया जिससे आज जरूरत पड़ने पर विड्रॉल किया जा सकता है।

इन कुछ परिवर्तनों से कुछ सुधार तो हुए परन्तु कुछ स्थानों पर कर्मचारी सेवानिवृत्त हुए उन्हें न्यूनतम पेंशन जो कि सरकार द्वारा निर्धारित है उससे भी बहुत कम पेंशन प्राप्त हुई। हम

लगातार यह मांग कर रहे हैं कि पुरानी पेंशन योजना बहाल करो या NPS के अंतर्गत न्यूनतम पेंशन की गारंटी प्रदान करो जो कर्मचारी के अंतिम वेतन का 50 प्रतिशत से कम न हो तथा पेंशन को प्राइस इंडेक्स से भी जोड़ा जाय। इस सम्बंध में GENC ने मार्च 2021, मई 2022 में राष्ट्रव्यापी आंदोलन किया तथा 17 नवम्बर 2022 को दिल्ली में एक बड़ी रैली की जो कि निजीकरण, निगमीकरण और विनिवेश के खिलाफ थी। GENC ने माननीय प्रधानमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन DOPT मिनिस्टर डा० जितेंद्र सिंह जी को दिया। जनवरी माह में 23 जनवरी 2023 को प्रेस कॉन्फ्रेंस देश भर में आयोजित की और सरकार को प्रेस के माध्यम से चेतावनी दी कि NPS को अविलम्ब समाप्त करो और OPS लागू करो। सरकार ने कुछ कदम आगे बढ़ाए हैं। वित्त मंत्री महोदय ने NPS के रिव्यू के लिये वित्त सचिव की अध्यक्षता में एक तीन सदस्यीय कमेटी गठित करने की घोषणा की है। हम कमेटी के समक्ष अपने सुझाव देने के साथ साथ आने वाले समय में राष्ट्रव्यापी आंदोलनों की श्रृंखला भी चालू रखेंगे। हम सरकारी कर्मचारी राष्ट्रीय परिसंघ के सभी घटक पटना में भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय अधिवेशन में आगामी आंदोलनों के सम्बंध में निर्णय लेंगे। हम सभी कमर कसकर संघर्ष के लिये तैयार रहें। दिनांक 27 मार्च 2023 को भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ का एक प्रतिनिधि मंडल सेक्रेटरी एक्सपेंडेचर मिनिस्ट्री ऑफ फाईनेन्स से मिला। और मुख्य रूप से NPS से OPS करने की मांग रखी। सेक्रेटरी महोदय ने जानकारी दी कि संसद में वित्त मंत्री महोदय ने इस सम्बंध में एक 3 सदस्यीय गठित करने की घोषणा की है आपके सुझाव जो समय समय पर प्राप्त होते रहे हैं उन पर विचार किया जाएगा एवं आपके और भी जो सुझाव प्राप्त होंगे उन पर भी विचार होगा। उन्होंने कहा कि स्पेशल सेक्रेटरी के साथ आप मीटिंग करके चर्चा करें। शीघ्र ही स्पेशल सेक्रेटरी से वार्ता होगी।

अन्य मुद्दों जैसे CGEIGS (ग्रुप इंश्योरेंस) की राशि ₹15 लाख करने, GPF की बीमा राशि जो अभी ₹6000 है उसे बढ़ाकर ₹6 लाख करने तथा फिक्स्ड मेडिकल एलाउंस ₹1000 से बढ़ाकर ₹5000 करने आदि विषयों पर भी सकारात्मक चर्चा हुई।

पुनः अप्रैल 2023 में महासंघ के साथ स्पेशल सेक्रेटरी महोदय से इन विषयों पर चर्चा होगी।



वे जानते थे पसीने का मोल

— अनुपम

सह संगठन मंत्री, भारतीय मजदूर संघ,

किसी भी महापुरुष के प्रारंभिक जीवन की चुनौतियों, परिस्थितियों, समय एवं स्थान का प्रभाव उसके विचारों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ऐसे कालखंड में जब भारत में मजदूर आंदोलन कुछ महत्वपूर्ण दौर में था उस समय बाबासाहेब ने श्रमिक वर्ग के अधिकारों तथा उनकी परिस्थितियों के प्रति उन्हें जागरूक किया एवं इसके लिए वे सतत संघर्षरत रहे।

1920 के दशक में भारत में कम्युनिस्ट मजदूर संगठनों का प्रभाव था। इन संगठनों ने बंबई के कपड़ा मिल मजदूरों का 1924, 1925, 1928 एवं 1929 में मिलों में हड़ताल के लिए आह्वान किया। 43 कपड़ा मिलों के लगभग 75,000 कर्मचारियों ने हड़ताल में हिस्सा लिया। इसके बाद दूसरे बड़े आंदोलन के तहत श्रमिकों ने अप्रैल 1934 में कपड़ा मिलों में हड़ताल की।

डॉ. आंबेडकर ने अपने 'बहिष्कृत भारत' तथा 'जनता' पत्रों के माध्यम से श्रमिकों को इन हड़तालों से दूरी बनाये रखने को कहा। क्योंकि वह राजनीति प्रेरित थीं एवं श्रमिकों की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे इन हड़तालों पर जाएं क्योंकि इससे उन्हें तुरंत भुखमरी का सामना करना पड़ता है। सो, कम्युनिस्टों ने डॉ. आंबेडकर को मजदूरों का शत्रु घोषित कर दिया था।

स्वतंत्र मजदूर दल : 1937 के प्रारंभ में भारत सरकार के 1935 के कानून के अनुसार प्रांतों को स्वायत्तता मिलने और नया राज्य शासन शुरू होने की संभावना से हर दल चुनाव लड़ने की तैयारी में था। डॉ. आंबेडकर ने सहयोगियों से विचार कर अगस्त 1936 में स्वतंत्र मजदूर दल स्थापित किया। उन्होंने उसका घोषणा पत्र भी जारी किया जिसमें आश्वासन दिया गया कि — श्रमिकों के लिए कानून बनाना, नौकरियां देना, पदच्युत करना, कारखानों में बढ़ती देना, काम के अधिकतम घंटे व वेतन श्रेणी अर्जित छुट्टी देना, सस्ते और आरोग्यदायी आवासों की व्यवस्था इत्यादि के बारे में कानून बनाए जाएंगे।

रेलवे मजदूरों का संगठन : 12 फरवरी, 1938 को मनमाड में अस्पृश्य रेलवे मजदूरों की एक परिषद में 20,000 मजदूरों की उपस्थिति में बाबासाहेब ने कहा — किशोरावस्था में मैंने अपने रिश्तेदारों का खाने के डिब्बे पहुंचाने का काम किया था मजदूरों की समस्या के बारे में मुझे सूक्ष्म जानकारी है। उन्होंने कहा, 'आज तक हम अस्पृश्य या दलित के रूप में इकट्ठे होते थे। लेकिन आज हम मजदूर के रूप में इकट्ठा हुए हैं।' कहा जाता है कि मैं मजदूरों का दुश्मन हूँ। वास्तव में ब्राह्मणशाही और पूंजीवाद ही मजदूरों का दुश्मन हैं। स्वतंत्रता, समता और वंधुभाव का अभाव यानी ब्राह्मणशाही।'

अस्पृश्य मजदूरों की समस्या : डॉ. साहेब कहते हैं कि ऐसी अनेक नौकरियां होती हैं जहां अस्पृश्यता के कारण अस्पृश्य मजदूरों को उनसे अलग किया जाता है। कपड़ा मिलों में कुछ विभागों में अस्पृश्य मजदूर नहीं लिए जाते। रेलवे में तो गैंग-मैन की नौकरी में ही सड़ते रहना उनकी तकदीर है। इतना ही नहीं उन्हें कुली भी नियुक्त नहीं किया जाता। अस्पृश्य मजदूरों को सबसे कम मजदूरी पर रखा जाता है, कोई उन्नति नहीं होती। किन्तु जैसे ही मंदी आती है, उनको सबसे पहले निकाला जाता है और जब मांग बढ़ती है तब सबसे अंत में रोजगार मिलता है। (डॉ. आंबेडकर और सामाजिक क्रांति की यात्रा, पृष्ठ 253)

कार्लमार्क्स का सिद्धांत भारत में अनुपयुक्त : बाबासाहेब बताते हैं जिस प्रकार कार्लमार्क्स ने समाज को मालिक तथा मजदूर के नाम से दो वर्गों में बांटा था, भारतीय परिस्थितियों में यह नितांत गलत है। इस तरह का विभाजन भारत में नहीं हो सकता। सभी मजदूरों को मिलाकर एक वर्ग समूह बन जाता है, वह यहां संभव नहीं है। हम सभी मजदूरों को मिलाकर एक संगठित समूह यहाँ कैसे बना सकते हैं? मजदूरों के अंदर एक सामूहिक एकता लाने के लिए उनको यह समझाना होगा कि उनके आपस की जो सामाजिक दूरियां और अशुद्ध भेदभाव हैं, वे दूर होने चाहिए। मैंने किसी भी श्रमिक नेता को इस सामाजिक भेदभाव के विरोध में बोलते हुए नहीं देखा। कम्युनिस्टों द्वारा चलाए गए मजदूर आंदोलन के बारे में उन्होंने कहा, 'मेरा कम्युनिस्टों से सम्बंध रखना बिल्कुल संभव नहीं है। मैं कम्युनिस्टों का कट्टर दुश्मन हूँ।' उनका ठोस मत था कि कम्युनिस्ट राजनीतिक ध्येय सिद्धि के लिए मजदूरों का शोषण करते हैं। (बाबासाहेब आंबेडकर : जीवन चरित, पेज संख्या 282)

कांग्रेस के साथ मत भिन्नता : 16 मई 1938 को चिपलून की सभा में उन्होंने कहा कि गांधी की मोहिनी विद्या मुझ पर प्रभाव नहीं डाल सकी। जवाहर लाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस गांधी की शरण में गये लेकिन मैं गांधी की शरण में कभी नहीं जाऊंगा। अगर किसी समय कांग्रेस में गया तो खुद की गुणवत्ता से वहां भी प्रभाव डालूंगा।

पिछले दस मास से मेरा खोती उन्मूलन विधेयक कांग्रेस ने जान-बूझकर पीछे छोड़ रखा है। इसी दरम्यान मध्य प्रांत के कांग्रेस के बड़े नेताओं में डॉ. ना. भा. खरे को जबरदस्ती उपद्रवी ठहराकर कर खारिज कर दिया गया। डॉ. खरे के एक हरिजन मंत्री के बतौर लेने के संदर्भ में गांधीजी का विरोध था। जबकि गांधीजी ने डॉ. खरे के साथ मध्य प्रांत में हरिजन कार्य के लिए दौरा किया फिर भी गांधी जी ने डॉ. खरे को हरिजन मंत्री के रूप

में लेने का कड़ा विरोध किया। सर्वेंट ऑफ इण्डिया सोसायटी में आयोजित सभा की अध्यक्षता करते हुए डॉ. खरे ने कहा—‘बहुमत के कारण राज्य शासन चलाने वाला दल भ्रष्ट बनता है। अपरिमित बहुमत से यह पूरी तरह समाप्त हो जाता है।’ इस राजनीतिक सूक्ति की उन्होंने सभी को याद दिलाई।

औद्योगिक कलह विधेयक 1938 : 15 सितंबर, 1938 को बंबई विधानसभा में यह विधेयक प्रस्तुत किया गया जिसका विरोध करते हुए डॉ. आंबेडकर ने कहा कि यह नया कानून मजदूरों द्वारा की जाने वाली हड़तालों को गैरकानूनी बताकर प्रतिबंध लगा देगा, यह उचित तरीका नहीं होगा।

यह विधेयक श्रमिकों के मौलिक कानूनों का हनन करेगा और यह असंवैधानिक है। डॉ. आंबेडकर जी ने उस समय की अन्य मजदूर यूनियनों के साथ मिलकर संघर्ष कर हड़ताल की और सफलता प्राप्त की।

इस कार्य के लिए उन्होंने कम्युनिस्टों की शक्ति को भी साथ लेकर मजदूरों का हड़ताल के लिए आह्वान किया। लेकिन कांग्रेस मंत्रिमंडल ने ठान लिया था कि यह विधेयक किसी भी हालत में मंजूर करा लेना है, और उन्होंने विधानसभा से उसे मंजूर करा ही लिया। कांग्रेस की इस दुराग्रही वृत्ति का मजदूर संघों ने ‘काला कानून’ कहकर विरोध किया।

7 नवंबर, 1938 को स्वतंत्र मजदूर दल और मिल मजदूर यूनियन एवं अन्य 60 विभिन्न मजदूर संघों ने मिलकर हड़ताल का शंखनाद किया।

हड़ताल के एक दिन पहले सायंकाल लगभग 80,000 मजदूरों की एक प्रचंड सभा मजदूर मैदान, बंबई में हुई। उसकी नियंत्रण समिति में जमनादास अध्यक्ष व डॉ. आंबेडकर, डांगे, निमकर मिरजकर और प्रधान इस समिति के सदस्य चुने गए। 90 प्रतिशत स्वयंसेवक आंबेडकर के स्वतंत्र मजदूर दल के ही थे। 7 नवंबर की हड़ताल का महत्व इतना बढ़ गया कि संयुक्त प्रांत (अब उत्तर प्रदेश) के विख्यात किसान नेता स्वामी सहजानंद डॉ. आंबेडकर से बंबई में उनके निवास स्थान पर मिलने आए। उन्होंने उनसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एकता के लिए कांग्रेस के साथ मिलने का आग्रह किया।

डॉ. आंबेडकर ने कहा— कांग्रेस ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ युद्ध पुकारा होता, तो मैं उस दल से मिल जाता, लेकिन यथार्थ में ऐसा नहीं है। कांग्रेस दल अपने हाथ में आए संविधानात्मक शासनतंत्र को पूंजीवादी और निरंतर स्वार्थ में लिप्त लोगों के कल्याण के लिए ही कार्यान्वित कर रहा है। उसने किसान और मजदूर के कल्याण की बलि दे दी है। इस तरह के संगठनों में मैं शामिल नहीं हो सकता।

संविधान निर्माता के पूर्व श्रम मंत्री : बाबासाहेब आंबेडकर 1942–1946 के काल में वायसराय की काउंसिल मंत्री के रूप में कार्य करते रहे।

इस सीमित कालखंड में बाबासाहेब ने दलित श्रमिक वर्ग के कल्याण हेतु अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

श्रम मंत्री के रूप में उन्होंने मजदूर तथा मालिकों को मिलाकर औद्योगिक क्षेत्र के लिए नई-नई नीतियां स्थापित कीं। इनमें से प्रमुख हैं।

1. मजदूरों की सामाजिक सुरक्षा हेतु नीतियां
2. श्रम नीति के नियमों को लेकर श्रमिकों एवं उद्योग मालिकों के मध्य विचार विनिमय की योजनाएं।
3. श्रम कानूनों को ठीक प्रकार से तैयार करके उनको उचित ढंग से लागू करना। मजदूर तथा मालिक के झगड़ों को ठीक प्रकार से निपटाने का प्रयास।

बाबासाहेब चाहते थे कि सरकार की श्रम नीति निश्चित करने में मजदूरों का सहभाग होना चाहिए। श्रम मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल (1942–46) में चार त्रिपक्षीय सम्मेलन हुए।

इन सम्मेलनों में मजदूरों के जीवनस्तर को उठाने के लिए इन सुविधाओं पर विचार-विमर्श किया गया:—

1. मजदूरों का न्यूनतम वेतन
2. काम के घंटे फैक्ट्री एक्ट के अनुसार
3. मजदूरों की भविष्य निधि
4. अधिक समय तक कार्य के बदले अतिरिक्त समय की व्यवस्था
5. सस्ते मूल्य के अनाज की व्यवस्था
6. कारखानों में जलपान गृह
7. विश्राम आदि की सुविधाएं

अपने इन न्यूनतम पांच वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने मजदूरों के हित में 25 कानूनों का क्रियान्वयन करवाया। उन्हीं के प्रयासों से मुख्य श्रम आयुक्त, प्रदेश श्रमायुक्त, श्रम निरीक्षक की नियुक्तियां प्रारंभ हुईं।

श्रम मंत्री के नाते बाबासाहेब ने जो कार्य किया, दुर्भाग्य से उसका योग्य मूल्यांकन नहीं हो सका। महिलाओं के लिए भी उन्होंने अनेक सुविधाएं यथा मातृत्व अवकाश के रूप में अवकाश देने का प्रावधान रखा। बाबासाहेब ने 1928 के मेटेरनिटी बेनिफिट बिल के पक्ष में विचार रखे।

आज भी बाबासाहेब के विचार व कार्य मजदूरों के बीच में तथा पूरे संगठित क्षेत्र एवं असंगठित क्षेत्र में सभी के लिए प्रासंगिक हैं। उस परिप्रेक्ष्य में हम आज की परिस्थितियों से कैसा तादात्म्य बैठा सकते हैं, यह विचार का विषय है।



संगठन का आधार : राष्ट्रवाद

—राम कुमार शर्मा

केन्द्रीय कार्यकारणी सदस्य भा.प्र.म. संघ

मिलकर रहने का नाम संगठन है। 'संगठन' का अर्थ है पारस्परिक सहकार्य का सूत्र स्थापित होना। संगठन की स्वाभाविक आवश्यकता का कारण भी यही है कि कोई व्यक्ति अकेला कुछ नहीं कर सकता। भौतिक हो चाहे आत्मिक, जीवन का सुख प्राप्त करना है तो अनेक लोगों का सहकार्य जरूरी है। कहने को हम भले ही कह दें कि अमुक कार्य मैंने अकेले ही किया है किन्तु यदि थोड़ा विचार करें तो पता चलेगा कि हमारी प्रत्येक कृति और उस कृति के कारण हुई उपलब्धि के पीछे समाज के अनेक बिन्दुओं के हाथ हैं। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को संगठित समाज—जीवन का अंग बनकर ही रहना चाहिए। यही स्वाभाविक है। इसी में सुख समृद्धि और प्रगति निहित है। संगठन में शक्ति है और शक्ति से विश्व में सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। संगठन की ही यह महिमा है कि इसके सहारे सुख के समय, सुख में कई गुना वृद्धि हो जाती है और दुःख आ पड़ने पर दुःख का आघात भी बंटकर कम हो जाता है।

किन्तु कोई भी भीड़ संगठन नहीं होती। अक्सर इस सम्बन्ध में लोग धोखा खा जाते हैं। भीड़ को ही संगठन समझ बैठते हैं। भीड़ और संगठन में अन्तर यह है कि भीड़ में प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको अकेला समझता, अनुभव करता है। अनेक व्यक्ति होते हुए भी प्रत्येक अलग-अलग है। सबकी कृतियाँ अलग हैं, सबके लक्ष्य और हित भी अलग हैं। उनमें से किसी को भी यह पता नहीं कि वहाँ कब क्या हो गुजरेगा? हो—हल्ला में कोई किसी की नहीं सुनता। सभी आपस में अजनबी हैं। हलचल तो है किन्तु अनुभूति के स्तर पर प्रत्येक अकेला है। संगठन में ऐसा नहीं रहता। अनेक होने के बाद भी संगठन में सबका मिल कर एक अस्तित्व है। लक्ष्य, दिशा और विचार एक हुए हैं। इस कारण सबके हित समान हैं। उनकी क्रिया में सौगुनी, हजारगुनी, लाखगुनी शक्ति प्रकट होती है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी इकाई होते हुए भी वह अब सम्पूर्ण का अभिन्न घटक है। इसलिए सफलता आनन्द, उत्साह संगठन की इस महिमा को समझकर ही अनेक प्रकार के संगठन बनाने का यत्न मानव करता है। विभिन्न आधार संगठन बनाने के लिए खोजे जाते हैं। उद्देश्य और आवश्यकता ही संगठन निर्माण का आधार बनते हैं। उद्देश्य और उनकी आवश्यकता का जैसा स्वरूप होगा वैसा ही संगठन का व्यापक और उसकी काल-मर्यादा तय होती है। उद्देश्य तात्कालिक और क्षणिक होगा तो आवश्यकता भी वैसी ही होगी, संगठन का रूप भी वैसा ही बनेगा। उतने ही दिन टिकेगा फिर बिखर जायेगा। खेल के मैदान में भी दो दल अपना-अपना संगठन बनाकर खड़े होते हैं। हार-जीत की होड़ लगती है। किन्तु यह संगठन खेल समाप्त होने तक ही रहेगा। ठीक उसी प्रकार से हम देखते हैं कि अनेक

समस्याओं को लेकर संगठन बनते हैं। परिस्थितियाँ उनका उद्देश्य निर्धारित करती हैं। ढाँचा खड़ा होता है। किन्तु इस बीच यदि परिस्थिति बदल गई तो संगठन में गतिरोध उत्पन्न हो जाता है। विभिन्न स्तरों पर प्रश्न खड़े हो जाते हैं कि संगठन का मूल स्वरूप ही हिल उठा। अध्यापक एक संगठन बनाते हैं। किन्तु कुछ समय बाद उन्हीं अध्यापकों में से एक प्रधानाध्यापक बन जाता है। तो लगता है कि उनके हित अब अलग हो गये। पचड़ा खड़ा हो गया। विवाद शुरू हो गया। संगठन की आवश्यकता पर ही शंका प्रकट की जाने लगी। इसी प्रकार अमीर, गरीब का मामला है। जो साधनहीन था वह यदि साधन सम्पन्न हो गया, अमीर बन गया तो उसे संगठन में से निकाल बाहर करने का प्रश्न आ उपस्थित हुआ। फिर सामाजिक जीवन में हम एक विशाल घेरे में खड़े रहते हैं। घेरे में हम किसी के दाहिनी ओर हैं तो किसी के बायीं ओर भी हैं। जाड़े में हमारे पास पहनने का जूता नहीं किन्तु हम पाते हैं कि ऐसे लोग भी हैं जिनके पाँव ही नहीं हैं। बिना पांव वाले से हम अधिक सम्पन्न हुए। इस प्रकार ऐसे संगठनों में स्तर की विभाजक रेखा खींचना भी व्यावहारिक नहीं होता। इसी प्रकार अमीरों के विरुद्ध गरीबों के संगठन बनते हैं। जातियों के अपने संगठन बनते हैं। डॉक्टर, वकील, व्यापारी, दूकानदार, ठेलेवाले, फुटपाथ वाले अनेक प्रकार के पेशे के अनुसार भी संगठन बनते हैं। आदतों की समानता भी संगठन बनाने का आधार प्रदान करती है। गीत गाने वाले, नृत्य करने वाले, लेखक, कवि, ही नहीं भ्रमण-यात्री भी संगठन बना लेते हैं। धार्मिक विश्वास और उपासना के आधार पर संगठन खड़ा करने का अवसर मिल जाता है। राजनीतिक आकांक्षाएँ, भाषा, खान-पान रुचि कितने ही उद्देश्यों से संगठन बनते हैं। व्यक्ति अपने जीवन में अनेक स्तरों पर व्यवहार करता है, इसलिए वह एक साथ कई संगठनों में भी बना रहता है। जीवन की जो आवश्यकता उस पर अधिक दबाव डालती है वह उसी प्रकार के संगठन को वरीयता देता है। व्यक्ति की यह वरीयता विभिन्न प्रश्नों के कम-अधिक दबाव से सदा बदलती रहती है। इस प्रकार संगठन बनते हैं, उभरते हैं, क्षीण पड़ते हैं, नष्ट होते हैं और फिर नये बनते हैं।

इन सब प्रकार के संगठनों की अपनी-अपनी उपयोगिता है। किन्तु फिर भी इतना तो स्पष्ट ही है कि परिस्थितियों पर निर्भर संगठन स्थायी स्वरूप के नहीं हो सकते। आवश्यकता की तराजू पर वे नीचे-ऊँचे होते रहते हैं। बाह्य कारणों पर बाह्य प्रतिक्रियाओं पर वे निर्भर रहते हैं। उनका ढाँचा स्वयं पूर्ण नहीं रहता। कई तो इसलिए भी व्यर्थ घिसटते रहते हैं क्योंकि उनका लक्ष्य ही व्यावहारिक नहीं होता। मानो, कई लोग मिलकर क्षितिज को छूने वालों का संगठन बनाये तो क्या कभी क्षितिज उनके हाथ में आ सकेगा। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ेंगे,

क्षितिज भी हटता जायेगा। मानव मात्र को संगठित करने की घोषणा करने वाले जो संगठन हैं वे प्रायः इस अव्यावहारिक कोटि में आ खड़े होते हैं। इस सम्बन्ध में विश्व की जो सबसे अधिक चर्चित संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था है, सबसे अधिक राष्ट्रों के पारस्परिक संघर्ष का अखाड़ा बनकर उपस्थित हुई है। कारण वहाँ विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधि के रूप में राज्य सत्ताएँ जम बैठी हैं। मानव के नाम पर ही राष्ट्रों से संघर्ष चले हैं। राष्ट्र को ही आधार मानकर सम्पूर्ण विश्व का व्यवहार हो रहा है। नाम विश्व संगठन का और तैयार होते हैं राष्ट्रों के झगड़े।

प्रश्न उपस्थित होता है कि एक ओर सम्पूर्ण विश्व के संगठन इस अव्यवहारिकता को देखते हुए और दूसरी ओर बाह्य कारणों एवं परिस्थितियों पर निर्भर अल्पजीवी संगठनों को देखते हुए क्या किसी ठोस, स्थायी व्यावहारिक दृष्टि से कल्याणकारी संगठन का कोई मार्ग उपलब्ध नहीं है?

मार्ग एक ही शेष है। आज ऐसा संगठन राष्ट्र के आधार पर ही व्यावहारिक और स्थायी हो सकता है। आवश्यकता की दृष्टि से राष्ट्र के आधार पर होने वाला संगठन सदा-सर्वदा के लिए जरूरी ही माना जायेगा। स्थायित्व की दृष्टि से संगठन में विभिन्न घटकों की परस्पर पूरकता का जो स्थान है वह राष्ट्र में सहज प्राप्त है। राष्ट्र का बहुविधि जीवन होने के कारण यह संगठन एकांगी भी नहीं होगा। आत्मनिर्भरता किसी भी संगठन की जीवन-शक्ति होती है और राष्ट्र इस दृष्टि से सदा सर्वदा कालजयी ही कहा जायेगा। जहाँ तक व्यावहारिक रूप से सक्षम होने का प्रश्न है आज के विश्व में यही एकमेव और सब प्रकार के आदान-प्रदान में मान्य इकाई है। इसलिए राष्ट्र को आधार मानकर संगठन का सच्चा स्वरूप उभरता है।

संगठन के सम्बन्ध में इस निर्णय पर पहुँचते समय हमें एक ओर विचार भी करना चाहिए। संगठन के कृत्रिम और स्वाभाविक भेद का अन्तर समझ लेना जरूरी है। पचास चीजों को एकत्रित कर स्वार्थ के आधार पर जो संगठन बनाया जाता है, उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। वास्तव में इसे संगठन न कहकर एकत्रीकरण कहना ठीक होगा। अंग्रेजी में इसे एसोसियेशन कहते हैं। यह कृत्रिम संगठन है एवं तभी तक ठीक है जब तक स्वार्थ हल होते हैं। किन्तु जहाँ स्वाभाविक संगठन होगा वहाँ स्वार्थ नहीं रहेगा। परस्पर अनुकूलता का भाव ऐसे स्वाभाविक संगठन के ऊपर से थोपा नहीं जाता, स्वाभाविक ही निर्माण होता है। अर्थात् जो कृत्रिम नहीं बनाया गया, स्वाभाविक ही प्रकट हुआ, वही संगठन है। राष्ट्र के सम्बन्ध में हम विचार करें तो हम पाते हैं कि राष्ट्र का संगठन किन्हीं स्वार्थों की पूर्ति के लिए नहीं उत्पन्न होता। मनुष्य शरीर में जिस प्रकार प्रत्येक अवयव स्वाभाविक ही क्रियाशील हैं। इसके लिए उन्हें प्रलोभन या शाबासी नहीं देनी पड़ती। उसी प्रकार राष्ट्र के घटक भी राष्ट्र की सेवा के लिए परस्पर अनुकूल व्यवहार करते हुए इसके संगठन को बनाये रखते हैं। एक राष्ट्र-भाव की विस्मृति के कारण घटक अंग शिथिल पड़ते हैं और यदि पूरी तरह निष्क्रिय हो गये तो सम्पूर्ण राष्ट्र

के विनाश के कारण भी बनते हैं। किन्तु यदि इन घटकों में राष्ट्र-भाव का जागरण हो जाय तो वे पुनः स्वाभाविक क्रिया में संलग्न हो उठते हैं।

अतः हमें कालजयी, स्थायी, सक्षम, आत्मनिर्भर, व्यावहारिक और स्वाभाविक संगठन के लिए राष्ट्र को ही आधार मानना होगा। राष्ट्र का संगठन दृढ़ हुआ तो सामर्थ्य निर्माण होगा और विभिन्न अंग पुष्ट हो सकेंगे। कश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रत्येक व्यक्ति के अन्तःकरण में भारत के अनादि अनन्त अति प्राचीन राष्ट्र-जीवन को जाग्रत करना ही मूलगामी कार्य है। भारत का राष्ट्रजीवन हिन्दूजीवन है, इस सत्य को ध्यान में रखकर ही भारत में राष्ट्रीय संगठन की आराधना करनी होगी।

अब इस सम्बन्ध में कुछ लोग ऐसा प्रश्न कर सकते हैं कि राष्ट्र का संगठन मानव समाज की दृष्टि से छोटा है, इसलिए संकुचित है। यह बात सैद्धान्तिक दृष्टि से गलत है। क्योंकि कोई वस्तु छोटी होने के कारण ही संकुचित नहीं हो जाती। शरीर में मस्तिष्क अथवा हृदय सम्पूर्ण शरीर की तुलना में छोटे आकार का होता है क्या इसीलिए उसे संकुचित कहना योग्य है? सच तो यह है कि सभी अंग एक दूसरे के पूरक हैं। वास्तविकता यही है कि राष्ट्र और विश्व भी एक दूसरे के पोषक हैं।

फिर कुछ लोगों का यह भी कहना है कि राष्ट्र मानवता का विरोधी है। इसका कारण बताया जाता है कि विश्व में ऐसे कितने ही राष्ट्र हैं जिन्होंने मानव का अहित किया है। किन्तु क्या किसी वस्तु के दुरुपयोग से ही वस्तु खराब हो जाती है? आग से मकान जल गये तो क्या यह बुद्धिमानी होगी कि आग का उपयोग करना ही छोड़ दिया जाय। ऐसा यदि हम करते चलेंगे तो कितनी चीजें छोड़ते जायेंगे? यह दृष्टिकोण ठीक नहीं कहा जा सकता। हमें विवेक से काम लेना होगा।

यह सही है कि विश्व में कुछ राष्ट्र ऐसे हैं जिन्होंने राष्ट्रीयता के नाम पर मानवता के लिए संकट पैदा किया। इन राष्ट्रों का इतिहास यदि हम बारीकी से देखें तो हमें पता चलेगा कि इसके लिए राष्ट्रीयता का विचार दोषी नहीं है। वहाँ का सम्पूर्ण जीवन चिन्तन ही दोषी है। मानव सम्बन्धी पृष्ठभूमि में विचार करने की जो स्वस्थ दिशा है वह वहाँ नहीं रही। वहाँ जीवन का विकास ही गलत ढंग से हुआ। पश्चिम के जीवन में संघर्ष को ही विकास माना गया। पश्चिम ने मान लिया कि मानव तथा अन्य प्राणियों का विकास परस्पर संघर्ष में से हुआ है। डार्विन के विकासवाद में इस प्रकार के संघर्ष का भरपूर उल्लेख मिलता है। कहा गया है कि इस संघर्ष में जो दूसरे का विनाश कर ले जाते हैं वही बचते हैं, इस कारण वहाँ प्रतिस्पर्धा को जीवन माना गया। अर्थव्यवस्था, समाज-व्यवस्था सभी में इसी प्रतिद्वन्द्विता को विकास का मुख्य सूत्र पश्चिम द्वारा स्वीकार किया गया। वहाँ मनुष्य को मूलतः स्वार्थी माना गया। सम्पूर्ण प्रकृति और सब प्राणी उसके उपभोग के लिए ही स्वीकार किये गये। इसी भीषण संघर्ष में से वहाँ राष्ट्रवाद का उदय हुआ। जो भी राष्ट्र बलशाली हुआ वह दूसरों को खा डालने के लिए ही खड़ा हुआ। वहाँ सामूहिक स्वार्थ के नाते ही राष्ट्रीयता पनपी। एक पाश्चात्य विचारक ने इसी भाव के अनुसार व्याख्या दी कि “नेशनलिज्म और पेट्रियाटिज्म इज सेलफिशनेस एक्सटेण्डेड” याने

राष्ट्रवाद या राष्ट्रभक्ति स्वार्थ को उद्दीपित करने का ही नाम है स्वार्थ के कारण एकत्रित होकर दूसरों से लड़ने के लिए प्रस्तुत होना ही उनके यहाँ राष्ट्रीयता का आधार बना। इस निषेधात्मक विचार में राष्ट्र की भावात्मक भूमिका ही छिन्न-भिन्न हो गयी। परस्पर सहयोग के आधार पर राष्ट्रवाद का विकास वहाँ नहीं हुआ। विरोध में से पैदा हुई राष्ट्रीयता घातक तो होगी ही। वहीं वहाँ हुआ।

यूरोप के देशों में राष्ट्र नाम की सत्ता हजार-बारह सौ वर्ष पूर्व निर्माण हुई। उसका विशेष विकास चार-पांच सौ वर्षों में हुआ। उनके उस इतिहास के आधार पर ही जो लोग राष्ट्रीयता सम्बन्धी निष्कर्ष निकालते हैं वे निस्संदेह राष्ट्रीयता को घातक समझते हैं। पहले वहाँ मजहब के आधार पर लोग एकत्रित हुए। ईसाईयों और यहूदियों में संघर्ष हुआ। बाद में ईसाई और मुसलमानों में क्रूसेड होने लगे। विभिन्न समूह अपनी-अपनी सत्ता के विस्तार के लिए युद्ध करते थे। भारी रक्तपात हुआ। इंग्लैण्ड की राष्ट्रीयता रोमन विरोध में से प्रकट हुई। स्थान-स्थान पर रोमन-कैथोलिक के प्रति विरोध की भावनाएँ उठीं आर्थिक शक्ति हाथ में लेने के लिए अंग्रेज और फ्रेंच और जर्मन के बीच लड़ाइयाँ हुई, इंग्लैण्ड, फ्रांस और स्पेन में जिस प्रकार राष्ट्रवाद उठा उसी प्रकार बाद में जर्मनी और इटली में उसका विकास हुआ। इस विकास-क्रम में जिसके हाथों अधिक सत्ता आई वह बाकी को पीड़ित करने, दुःख देने लगा। दुनिया में संकट उत्पन्न हुआ। जो मजहब को नहीं मानते उन कम्युनिस्टों ने भी अपनी विचारधारा का आधार वर्ग-संघर्ष ही माना है। पहले मजहब के आधार पर लड़ते थे। जबरदस्ती दूसरों पर मजहब लादा जाता था। जो राजा का मजहब होता था सारी प्रजा उसे मानने के लिए बाध्य की जाती थी। जो राजा के मजहब को न माने उस प्रजा को देश से बाहर निकाल देने का यत्न हुआ। जो बात पहले मजहब के नाम पर होती थी वही कम्युनिस्ट देशों में सत्ता के नाम पर आज हो रही है। इस प्रकार पश्चिम में राष्ट्रवाद का उदय मानव के पारस्परिक समन्वय में से नहीं, संघर्ष से हुआ है। घृणा, द्वेष और विनाश ही वहाँ उत्पन्न किया गया है।

किन्तु इसी आधार पर भारत की राष्ट्रीयता का मूल्यांकन करना गलत होगा। भारत में राष्ट्र-भाव का उदय स्वार्थ के रूप में प्रकट नहीं हुआ। भारत में राष्ट्रवाद का विचार कुछ सौ वर्षों का नहीं, सहस्राब्दियों का है। उसका आधार आपसी संघर्ष नहीं समन्वय है, परस्परानुकूलता है। पश्चिम के समान भारत की राष्ट्रीयता एक बड़ी प्राइवेट कम्पनी जैसी नहीं है जहाँ प्रत्येक नागरिक शेयर होल्डर के नाते अपने स्वार्थों के कारण ही चिपका हुआ हो। स्वार्थ के कारण तो डाकू भी एकत्रित होकर परस्पर ईमानदारी का व्यवहार करने लगते हैं। जेबकतरे भी आपस में कुछ नियमों का पालन करने लगते हैं। स्वार्थवश उत्पन्न हुए इन नियमों के आधार पर गठित संगठनों की प्रेरणा ही अलग होती है। ऐसा भारतवर्ष में नहीं हुआ। भारतवर्ष में मानव कल्याण का एक व्यापक और उदार जीवन-दर्शन प्रकट हुआ। जीवन के इस समग्र चिन्तन के कारण सामूहिक जीवन की एक ही अनुभूति अन्तःकरणों में हुई। इसके आधार पर भारत का राष्ट्रजीवन विकसित हुआ। मानव जीवन के श्रेष्ठ गुणों की आराधना का भाव गूँज उठा। भारत का मानस बोल उठा कि सृष्टि की प्रत्येक बलचल में संघर्ष नहीं पूरकता है। एक ही तत्व विभिन्न रूपों में उपस्थित हुआ है। इसलिए जो इन सब

विभिन्नताओं में भी उस एक ही आत्मा का दर्शन करता है वही श्रेष्ठ है, आर्य है, मनुष्य कहलाने योग्य है। इस श्रेष्ठ मनुष्य के निर्माण में जो व्यवस्था, जो नियम लागू हों वे ही धर्म हैं। स्वार्थ के स्थान पर समर्पण को मान्यता दी गई। प्रतिक्रिया के स्थान पर भावात्मक और रचनात्मक पद्धति से विचार हुआ। प्रतिद्वन्द्विता के स्थान पर भावात्मक और रचनात्मक पद्धति से विचार हुआ। प्रतिद्वन्द्विता के स्थान पर परस्पर पूरकता का मंत्र गुंजाया गया। क्षमा, दया, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य की महिमा गायी गई। विभिन्न प्रकार की आस्थाओं को मानव के विकास की सीढ़ियाँ कहकर समाहित किया गया। विभिन्न सम्प्रदायों का आदर हुआ। एक ही सत्य के विभिन्न रूपों, उनके नामों और सत्य तक पहुँचने ही की पद्धतियों को स्वस्थ विकास के लिए अपरिहार्य नहीं, नितान्त आवश्यक माना गया। इसलिए केवल सहिष्णुता ही नहीं एकात्मता की आराधना करने का उपदेश मिला। भारत का यह राष्ट्रवाद प्राणी मात्र के प्रति कल्याण की भावना लेकर प्रकट हुआ।

इसलिए पश्चिम के राष्ट्रवाद से भारत के राष्ट्रवाद की तुलना करना ही गलत है। पश्चिम ने द्वैत के आधार पर संघर्ष का नगाड़ा बजाया और भारत ने अद्वैत के आधार पर एकात्मकता की बांसुरी बजायी। दोनों वाद्य होते हुए भी दोनों की स्वरलहरियों में भारी अन्तर है। इस भेद को समझ कर हमें अपने राष्ट्र के संगठन का विचार करना चाहिए। यूरोप के देशों में राष्ट्रवाद के कारण विनाश हुआ इसीलिए भारत के राष्ट्रवाद को भी विनाशकारी कहना 'दूध का जला छाछ को भी फूँक-फूँक कर पीता है' वाली कहावत चरितार्थ करना है। इसलिए जिन राष्ट्रों ने मानव के लिए संकट पैदा किया- गलत कार्य किया, वैसा ही परिणाम हमारी राष्ट्रीयता से भी निकलेगा, यह निष्कर्ष ही गलत है। यह केवल घोषणा की बात नहीं। भारत की राष्ट्रीयता का सहस्रों शताब्दियों का इतिहास इस तथ्य की पृष्टि करता है। विश्व के इन देशों ने जहाँ विगत हजार पाँच सौ वर्षों में भीषण विनाश के दृश्य उपस्थित किये वहाँ भारत के लम्बे इतिहास में मानव को पीड़ा पहुँचाने का उल्लेख करने वाला एक भी पृष्ठ नहीं है। भारत का यदि कोई इतिहास है तो वह समस्त विश्व की मंगलकामना का ही है। विश्व के विभिन्न देशों में प्राप्त भारतीय इतिहास के अवशेष आज भी इसी तथ्य की घोषणा कर रहे हैं कि भारत ने प्राणिमात्र के कल्याण के लिए ही प्रयत्न किये हैं। इसलिए सत्य तो यह है कि विश्व में परस्पर संघर्ष, विद्वेष, प्रतिद्वन्द्विता के आधार पर प्रकट हो रही पश्चिमी राष्ट्रवाद को ही संगठित और सक्षम बनाकर खड़ा करना होगा। यही विश्व कल्याण का मार्ग है।

संगठन मंत्र

ॐ संगच्छ्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते॥

पग से पग मिलाकर चलो, स्वर में स्वर मिलाकर बोलो, तुम्हारे मनो में समान बोध हो। पूर्व काल में जैसे देवों ने अपना भाग प्राप्त किया, सम्मिलित बुद्धि से कार्य करने वाले उसी प्रकार अपना-अपना अभीष्ट प्राप्त करते हैं।



Government ORDERS

Continue from previous Edition...

No.2IN2022-E.IIB, Government of India, Ministry of Finance, Department of Expenditure, dated 30/12/22

Subject: Compendium of instructions regarding grant of House Rent Allowance to Central Government employees -regarding

3. AREAS WHERE ADMISSIBLE:

3.1. HRA is admissible with reference to the 'place of duty' of the Government servant, irrespective of whether Government servant is residing at that place or any other place.

3.2. For deciding the classification of 'place of duty', the limits of the locality within which these orders apply, shall be those of the named municipality or corporation and shall include such of the suburban municipalities, notified areas or cantonments as are contiguous to the named municipality; or corporation or other areas as the Central Government may from time to time notify.

3.3. The instructions shall automatically apply/ cease to apply to areas which may be included within / excluded from the limits of the named UA or municipality or corporation by the State Government concerned, from the date of such inclusion/ exclusion.

3.4. Staff working in Central Government establishments within a distance of 8 kilometres from the periphery of the municipal limits of a qualified city will be allowed House Rent Allowance at the rates admissible in that city even though they may not be residing within those municipal limits, provided that-

(i) A certificate in the prescribed format (as per Annexure-1) from the Collector/Deputy Commissioner having jurisdiction over the area, is obtained by the Administrative Ministry/Department concerned and referred to the Ministry of Finance, Department of Expenditure for initial sanction of HRA for a period of 3 years.

(ii) Further extensions for grant of HRA beyond the initial period of 3 years may be allowed by the Administrative Ministries/ Departments in consultation with their Financial Advisers and by the C&AG, in respect of staff serving under him.

(iii) Benefit of the concession of HRA may be extended to the employees working in a place which though a town panchayat is generally dependent for its essential supplies on a qualified city and is within the 8 kms. limit of the periphery of the qualified city.

(iv) HRA will also be payable to the Central Government employees within the area of the Urban Agglomeration(UA) of classified city at the rates admissible in the classified city. The existing provisions for the payment of House Rent Allowance under Paras.3.4 above, will, however, continue to be applicable only at places which are within 8 kilometres of municipal limits of classified cities, but which are not included within UA of any city, subject to fulfilment of usual conditions laid down and subject to issue of specific sanctions therefore as before.

(v) The certificate of Dependency may be obtained from the Collector in all cases where the grant of HRA under Para. 3.4 is proposed. In all cases where the Collector certified that the area in question depends for its essential supplies on the qualifying city even though there may be another municipal area within the 8 kms. radius, Government would consider on merits whether grant of House Rent Allowance in such cases would be justified.

4. ADMISSIBILITY OF HRA :

HRA shall be admissible subject to the following conditions:-

4.1. The allowance shall not be admissible to those who occupy General Pool Residential accommodation provided by the Government.

4.2. Where Government quarters are available for the staff of specified Departments or for specified categories of staff, the procedure for applying for accommodation for payment for HRA will be regulated under the rules of the Ministry/Department concerned for allotment of the accommodation.

4.3. HRA drawn by a Government servant, who accepts allotment of Government accommodation, shall be stopped from the date of actual handing-over of accommodation in immediate habitable condition to the Government servant. In case of refusal of allotment of Government accommodation, HRA shall cease to be admissible from the date of allotment of Government accommodation. In case of surrender of Government accommodation, the House Rent Allowance, if otherwise admissible, will be payable from the date of such surrender.

4.4. A Government servant debarred from allotment of Government accommodation due to unauthorized sub-letting, or for other breaches of rules,

but excluding those covered by 4.3 above will be eligible for HRA during the period of such debarment.

4.5. Female Government servants residing in the Western House Hostel and the Working Girls' Hostel, Delhi, or elsewhere in Government-run hostels are not entitled to House Rent Allowance. Government servants living in hostels run by Autonomous and semi-Government Organizations, which are not run on commercial lines (i.e., Central Government employees allotted hostel accommodation are not charged market rent, but a subsidized rent), would not be entitled to HRA.

4.6. A Government servant, who, on transfer, has been permitted to retain Government accommodation at the old station on payment of normal rent or penal rent or retains Government accommodation unauthorizedly on payment of market rent, etc., will be entitled to HRA at the new station for the period upto 8 months from the date of his transfer.

4.7. A Government servant who was not in occupation of Government accommodation at his old station and who, on transfer, leaves his family behind at the old station because he has not rented a house or has not been allotted Government accommodation at the new station, will be eligible for House Rent Allowance for a period of six months from the date of his assumption of charge at the new station till Government accommodation allotted to him at the new station. HRA in such cases shall be regulated as per the place of duty from the date of assumption of charge.

Note: HRA shall be admissible at the rate at which it was being drawn by him/her at the previous place of posting till the end of current academic of his/her child(ren).

4.8. In either case, the grant of HRA under these provisions shall not be admissible beyond the date on which Government accommodation allotted to him/her at the new station.

4.9. During the period of transfer not exceeding 90 days, a Government servant shall draw HRA at the same rates at which he was entitled at the time of transfer. For periods of transfer exceeding 90 days, the rate of HRA shall be regulated with reference to the new place of posting. If a transfer, initially made for a period not exceeding 90 days, is later extended, rate of HRA shall be regulated with reference to new place of posting from the date of issue of orders extending the transfer beyond 90 days.

5. CONDITIONS FOR DRAWAL OF HOUSE RENT ALLOWANCE

5.1. A Government servant shall not be entitled to

HRA, if-

(i) he/she shares Government accommodation allotted to another Government servant; or

(ii) he/she resides in accommodation allotted to his/her parents/ son/ daughter by the Central Government, State Government, an Autonomous Public Undertaking or semi-Government Organization such as a Municipality, Port Trust, Nationalized Banks, Life Insurance Corporation of India, etc; or

(iii) his/her spouse has been allotted accommodation at the same station by the Central Government/State Government/ Autonomous Public Undertaking/ Semi Government Organization such as Municipality, Port Trust, etc., whether he/she resides in that accommodation or he/she resides separately in accommodation rented by him/her.

5.2 Government servants other than a Government servant who is living in a house owned by him shall be eligible for HRA even if they share Government accommodation allotted to other Government servants [excluding those mentioned in (5.1) above] or private accommodation of other Government servants [including those mentioned in 5.1.(i) & (iii) above] subject to the condition that they pay rent or contribute towards rent or house or property tax but without reference to the amount actually paid or contributed.

5.3 In cases where husband / wife/ parents / children, two or more of them being Central Government servants or employees of State Governments, Autonomous Public Undertakings or semi- Government Organizations like Municipality, Port Trust, Nationalized Banks, Life Insurance Corporation of India, etc., share accommodation allotted to another Government servant , HRA will be admissible to only one of them, at their choice.

NOTE. The term "accommodation" includes the accommodation allotted to the employees of State Governments, Autonomous Public Undertakings, semi-Government Organizations such as Municipality, Port Trust, etc.

5.4. Drawal of HRA by husband and wife when both of them happen to be Government servants and are living in hired/ owned accommodation- HRA would be admissible to both as per their entitlement.

5.5. Reimbursement of rent to Government servants during their temporary stay in State Bhavans /Guest Houses/Departmental Guest Houses run by Central Government/State Governments/ Autonomous Organizations, etc.- The officials on their posting to the Centre and the Central Government officials on their

transfer/posting to a new station, necessitating change of residence if they temporarily stay in State Bhavans/ Guest Houses/Departmental Guest Houses run by Central Government/ State Governments / Autonomous Organizations, etc. may be reimbursed the amount of rent paid subject to fulfilment of the following conditions:-

(i) The official has applied for accommodation of his entitlement, but has not been allotted residential accommodation by the Government.

(ii) The concerned Guest House should be located at the place of posting of the official.

(iii) The official must have stayed in State Bhavans / Guest Houses/Departmental Guest Houses run by Central Government/ State Government / Autonomous Organizations etc. and submit rent receipts in support of payment of rent.

(iv) Reimbursement of rent shall be admissible upto a maximum period of six months.

(v) No HRA shall be admissible during this period.

6. REGULATION OF HRA IN DIFFERENT CIRCUMSTANCES

The drawal of House Rent Allowance in the following circumstances shall be regulated as under:

6.1 During Leave :

6.1.1. A Government servant will be entitled to draw HRA during leave at the same rates at which he was drawing these allowances before he proceeded on leave. For this purpose, leave means total leave of all kinds, as per CCS(Leave) Rules (including child care leave, extraordinary leave etc.) not exceeding 180 days and the first 180 days of the leave if the actual duration of the leave exceeds that period; but does not include terminal leave, whether running concurrently with the notice period or not. When vacation or holidays are combined with leave, the entire period of vacation or holidays and leave should be taken as one spell of leave. HRA will be admissible during Leave Preparatory to Retirement(LPR) subject to submission of certificate that the employee concerned and/ or his family continues to reside at the same place/ same station.

6.1.2. In the case of Government servants who are originally granted leave on medical certificate exceeding 180 days and have ultimately to retire from Government service on grounds of invalidity, the entire leave thus becoming leave preparatory to retirement, recovery of HRA already drawn need not be effected . Central Government servants who are originally granted leave on medical grounds or otherwise but do not join duty after expiry of such leave owing to death / invalidation during such leave may also be regulated in

the same manner.

6.1.3. The drawal of HRA during periods of vacation or holidays whether combined with leave or not shall be regulated in the same way as during leave.

6.1.4. In cases, where a Government servant who is sanctioned leave, whether on medical grounds or otherwise, does not join duty after availing himself of such leave, and resigns, he shall not be eligible for HRA for the entire period of such leave. The Administrative Authority concerned shall ensure that the entire amount drawn on this account is recovered before resignation, etc., is accepted .

6.1.5. Drawal of HRA during the period of leave in excess of first 180 days availed of on grounds other than medical grounds mentioned in sub-para. (6.1.6) below shall be subject to furnishing of the certificate prescribed in Annexure-111.

6.1.6. The limit of 180 days shall be extended to 8 months for the purpose of the grant of these allowances in the case of Government servants suffering from TB, Cancer or other ailments during the period of their leave taken on medical certificates when such certificates are in the forms prescribed. It is immaterial whether the leave is on medical certificate from the very commencement or is in continuation of other leave as defined in (i) above. In the case of employees suffering from TB, Cancer or other ailments, who remain on leave for a period exceeding 8 months, the grant of HRA for the period of leave beyond 8 months, may be decided by the respective Controlling Authorities irrespective of the period of leave involved so long as the medical certificate in the prescribed form is available.

6.1.7. In case of Study Leave approved by Government of India, employee shall be eligible for HRA at the place of study without producing certificate mentioned in Annexure III.

6.2. During Joining Time:

During Joining Time, a Government servant shall continue to draw HRA at the same rates at which he was drawing these allowances at the station from where he was transferred. Where, however, joining time is affixed to leave, joining time shall be added to the period of 180 days referred to in 6.1 above unless, in any case, it is otherwise expressly provided.

6.3. During Deputation Abroad:

The officers going abroad on deputation, their HRA shall be regulated at the rates admissible to them from time to time at the station from where they proceeded abroad on deputation in the following manner:-

(i) An employee proceeding on deputation abroad will be eligible for HRA till such time as his family

remains at the last place of his duty in India. In the event of an employee applying for family passage to the place of deputation abroad or for Transfer Travelling Allowance in respect of his family's journey from the headquarters in India to Home Town or any other station, he will not be required to refund the amount of HRA up to the date up to which the family actually resides at the last Headquarters of the employee in India.

(ii) The drawal of HRA will be subject to the production of certificate prescribed in Annexure III.

6.4. During Training Abroad:

A Government servant who is deputed for training abroad under the various training schemes sponsored by the Government of India or operated through non-official channels shall be entitled to draw HRA during the entire period of such training at the rates admissible to him from time to time at the station from where he was deputed abroad for training subject to the production of certificates prescribed in Annexure III.

Leave taken during the course of training or immediately after the completion of training abroad to cover stay-overs/stop-overs resulting in the absence of the trainees abroad beyond a period of six months cannot be treated as part of the period of training and as such the Government servant concerned will not be entitled to any HRA during the period of leave taken on training abroad irrespective of whether the leave falls within the first six months of the training or immediately after the completion of the training abroad.

6.5. During Training in India:

A Government servant, whether permanent or temporary, who is sent on training in India, and whose period of training is treated as duty under FR 9 (6) (b), shall be entitled to draw during the entire period of such training, Compensatory (City) and House Rent Allowances at the rates admissible to him, from time to time, at either the place of training or the place of duty from where he proceeded on training, whichever are more favourable to him. For claiming the allowances admissible at the place of duty from where a Government servant proceeded to another station for training, he will be required to furnish the certificate(s) prescribed in Annexure III.

NOTE. – A Government servant who is allowed travelling allowance as on tour and draws daily allowance at the place of training will draw HRA at the rates admissible to him at his headquarters from where he proceeded on training.

6.6. During Suspension :

The drawal of HRA to a Government servant under

suspension shall be regulated with reference to FR 53 (1)(ii)(b) and FR 54 subject to his furnishing certificate prescribed in Annexure III for drawal of allowance for periods beyond 180 days from the date of suspension.

NOTE.- If the headquarters of a Government servant under suspension are changed in the public interest by orders of a Competent Authority, he shall be entitled to the HRA as admissible at the new station, provided he furnishes the requisite certificate with reference to such station .

6.7. To Re-employed Pensioners:

The drawal of House Rent Allowance in the case of re-employed pensioners shall be regulated as indicated below-

(i) In the case of officers whose pay plus pension exceeds the sanctioned maximum pay of the post, the allowances will be calculated on that maximum.

(ii) In the case of officers whose pay on re-employment in a civil post is fixed without taking into account the entire pension or a part thereof, the amount of pension so ignored shall also not be taken into account for the purpose of the grant of HRA.

(iii) In other cases, the allowances will be calculated on pay plus pension.

6.8. Persons whose leave terms are not regulated under the Fundamental Rules or the CCS (Leave) Rules, 1972 :

6.8.1. Industrial and other employees, whose leave terms are regulated by special orders and not under the Fundamental Rules or the CCS (Leave) Rules, 1972, may be granted HRA during the first 40 days of leave at the same rates at which they were drawing these allowances before proceeding on leave. Where, however, under any special orders, such employees are eligible to draw these allowances for period of leave in excess of 40 days at it time, they will continue to be governed by those orders.

6.8.2. The limit of 40 days shall be extended to 180 days in the case of such employees suffering from TB/ Cancer / other ailments during their leave taken on medical certificates when such certificates are in the forms prescribed. It is immaterial whether the leave is on medical certificate from its very commencement or it is in continuation of other leave. The question whether the allowances may be paid to an Officer suffering from TB / Cancer/ or other ailments during leave on medical certificate exceeding 180 days shall be decided on merits by the Ministry / Department in consultation with Financial Adviser concerned. Drawal of allowances

beyond 180 days will be subject to the furnishing of certificate in Annexure III.

6.9. During Tour :

For the period of Tour, A Government servant's entitlement to these allowances shall be regulated with reference to his Headquarters.

7. CERTIFICATES for the grant of HRA :

7.1 Dependency Certificate as required for grant of HRA under para 3.4, given in Annexure-I.

7.2.1 Every Government servant shall furnish along with his first claim for House Rent Allowance, a certificate in the Form given in Annexure-II.

7.2.2 While non-Gazetted Officers shall furnish the requisite certificates to their Head of Office, Gazetted Officer shall furnish the same to their Accounts Officers.

7.2.3 The following certificates shall be endorsed by the Drawing and Disbursing Officers on the bill in which HRA of non-Gazetted Officers are drawn by them :-

(i) "Certified that in the case of all Government servants for whom HRA are drawn in this bill, the eligibility of the allowance has been verified with reference to Government of India, Ministry of Finance, O.M. No. _____ dated _____

(ii) "Certified that the certificates prescribed by Government have been obtained from the Government servants for whom HRA has been drawn in this bill and I am satisfied that the claims are in accordance with the orders in force."

7.3 The certificates required under paras. 6.1.5, 6.3, 6.4, 6.5, 6.6, 6.8 will be as per Annexure-III.

ANNEXURE- I

CERTIFICATE

(The certificate on Official Letter head (in original) should be in respect of only one place. If there are more than one place in respect of which the proposal relates, appropriate certificates in respect of each of such places should be given.)

It is hereby certified that –

1. 1 _____ is a 2Village/ Panchayat/ Town Panchayat/ Non- municipal area;

2. 1 _____ is not a Municipality or Notified Area or Cantonment;

3. 1 _____ is not part of any Urban Agglomeration (UA);

4.1 _____ is within a distance of 8 kilometres from the periphery of the municipal limits of _____ 3 _____

Signature of the District Collector/ Deputy Commissioner having jurisdiction over the place

Seal of the District Collector/
Deputy Commissioner

Date

1. Name of the place in respect of which the proposal relates.

2. The civic status of the place, i.e., Village, Panchayat, Town Panchayat, Non- Municipal area, etc., should be indicated.

3. Name of the Municipality.

ANNEXURE- II

Certificate to be furnished by all Central Government servants:

(1) I certify that I am residing in a house hired/ owned by me / my wife / husband/ son / daughter/ father / mother / a Hindu undivided family in which I am a coparcener.

(2) I certify that I am not sharing accommodation allotted to my parent/child by the Central/State Government, an autonomous public undertaking or semi- Government organization such as municipality, port trust, etc., allotted rent-free to another Government servant.

(3) I certify that my husband /wife / children/ parents who is / are sharing accommodation with me allotted to another employee of the Central / State Government / autonomous public undertakings or semi – Government organizations like municipality, port trust, etc., is/are not in receipt of HRA from the Central/ State Government / autonomous public undertakings or semi- Government organizations like municipality, port trust, etc.

(4) I also certify that my wife/ husband has not been allotted accommodation at the same station by the Central / Sate Government / autonomous public undertakings or semi Government organizations such

as municipality, port trust, etc.

Signature of the Govt. servant

Name of the Govt. servant

Designation

Date

*Strike out whichever is not applicable

ANNEXURE- III

CERTIFICATE

The Government servant concerned continued for the period for which House Rent Allowance is claimed, to retain the house at the same station (whether within its qualifying limits or in an adjoining area)

I certify that I retained the accommodation for the period for which HRA is being claimed at the same station from where I was placed under suspension" or proceeded on leave/deputation abroad/training/etc" .

Signature of the Govt. servant

Name of the Govt. servant.

Designation

Date:

*Strike out whichever is not applicable



F. No. S.11030/19/2023-EHS, Government of India, Ministry of Health and Family Welfare EHS Section dated 17/03/23

Setting up of Grievance/Advisory Committee At Dispensary Level -

Modification Ree.

Local Advisory Committees were set up for all CGHS dispensaries with specific composition and specific mandate in 2005 with some modifications notified in 2010. It has been seen that the functioning of these Advisory Committees has been less than satisfactory. Hence, this mechanism needs to be refined to ensure optimal functionality to facilitate seamless delivery of health care services and prompt redressal of grievances within the CGHS System. In this context the following guidelines are being issued.

2. Constitution of Local Advisory Committee (LAC) at the Health and Wellness Centre (HWC),

CGHS level:

• The LAC for all Health and Wellness Centres (HWCs) across the country to have the following composition:

1. C.M.O In-Charge
2. Area Welfare Officer(s)
3. Representative from Resident Welfare Associations.
4. Representative of Pensioners
5. Representative of Local Chemist.

This Committee shall be duly notified by the Additional Director, CGHS of the Zone. The meetings of the Committee shall be held at least once in a month and the mandate of the Committee shall be the following:

- (i) Disposal of the pending claims of individuals and HCOs,
- (ii) Assessment/Evaluation of performance of Local Chemists, including Jan Aushadhi Kendra and other systems of medicines;
- (iii) Provision of amenities to beneficiaries (infrastructure) at the HWC,
- (iv) Staff punctuality and behaviour towards beneficiaries,
- (v) Cleanliness and maintenance of the HWC,
- (vi) Grievance Redressal of any grievance received in the grievance box of the dispensary or otherwise (on line)

The term of the Members of LAC at Health and Wellness (HWC) level shall be as follows:

- (i) The term of the Members of the Committee except CMO in-charge will be for two years only and will come into effect on 1st January every alternate year.
- (ii) No Member shall be nominated for the 2nd term.
- (iii) Except Area Welfare Officer, who is nominated by DOPT, two Members each from Resident Welfare Association and Pensioners' Welfare Association shall be nominated by respective Association and CMO VC shall approach these Associations for this purpose.

Based on the mandate above, LAC shall be responsible for taking up such tasks and adhere to such norms as prescribed here under:

- (i) The Committee will meet every 2nd Saturday of the month,
- (ii) Study the grievances/suggestions received in the complaint box and record in the register in the presence of all the LAC members,
- (iii) Should a need arise, call the complainant on phone

- or in the next meeting to sort out the grievances,
- (iv) To suggest ways and means to improve the functioning of the dispensaries within the available resources,
 - (v) To liaise with different agencies involved in the supportive services for the maintenances of the CGHS dispensaries,
 - (vi) To inform the CMO VC about any serious patient (CGHS beneficiary) and help to organise for his/her treatment,
 - (vii) To monitor the functioning of Authorised Local Chemist/ Jan Aushadhi Pariyojana,
 - (viii) To study the stock availability in the Wellness Centre store,
 - (ix) To study the status/pendency of the claims,
 - (x) To monitor the performance of staff and will identify the best worker on quarterly basis. His / Her photograph will be displayed prominently in the Wellness Centre and will also be awarded certificate of appreciation by the Committee,
 - xi. In the meetings, only local issues of the concerned dispensary shall be discussed, and the Committee shall not interfere in any policy matter, and shall not correspond directly with the authorities but through proper channel that is, Zonal Additional Director / City Additional Director / Joint Director for the same,
 - (xii) The names, addresses and telephone numbers of the Committee members to be prominently displayed in the Health and Wellness Centre,
 - (xiii) Area Welfare Officer, who is also a member of the committee, will also inform the beneficiaries about the functioning of the Advisory Committee in the Area Welfare Meetings. He will also guide the beneficiaries that any complaint regarding functioning of the Wellness Centre is to be made to the Committee instead of approaching the higher authorities directly,
 - (xiv) Establishment of a dedicated helpline (TOLL FREE No. 1800-208-8900) and a call log shall be maintained,
 - (xv) Record of Discussions to be maintained and pasted on the NOTICE BOARD of Wellness Centre for perusal of beneficiaries.

3. Similarly, there shall be a Zonal Advisory Committee (ZAC) at the level of Additional Director of the concerned Zone. The composition of the committee at the zonal level shall comprise of:

- (i) Additional Director (Zone), CGHS
- (ii) Chief Medical Officer dealing with Reimbursement

- / Hospital Bills,
- (iii) Nodal Officer for Grievances,
- (iv) Administrative Officer/Office Superintendent-Member Secretary,
- (v) Two representative of CGHS beneficiaries,
- (vi) Representative of CGHS empanelled Hospitals/Distributor of Jan Aushadhi Pariyojana may be co-opted as needed' and
- (vii) Area Welfare Officer to be included on rotation basis (quarterly).

The Zonal Advisory Committee shall be notified by the Joint Secretary (MoHFW), looking after affairs of CGHS. The ZAC meeting shall be held once in a month, preferably on the fourth Saturday.

The mandate of Zonal Advisory Committee shall be:

- (i) To examine the issues /grievances escalated post-LAC Meetings;
- (ii) To examine and take action based on the recommendations of the local advisory committee;
- (iii) To monitor the issue of CGHS cards;
- (iv) To Monitor the settlement of individual medical claims and Hospital bills;
- (v) To monitor issues related to shifting of Wellness Centre / Major repairs of Wellness Centres in progress/ proposed;
- (vi) To study the grievances/suggestions received in the complaint box of Zonal office / AD office and record in the register;
- (vii) Monitoring of timely issue of Pension pay order / Family Pension and timely settlement of Gratuity and other matters related to retirement benefits;
- (viii) To examine the complaints against the empanelled private hospitals and sort out the grievances;
- (ix) To look into the complaints against CMOs In-charge;
- (x) To ensure complete adherence to the budgetary allocation and monitor expenditure on a monthly basis;
- (xi) To invite HCOs and Labs for addressing their issues and ensure that the contents of the MoU is honoured by them in letter and spirit; and
- (xii) To hold CGHS panchayat at Zonal level; once in 2 months where all the executive orders, office memoranda shall be shared with the beneficiaries.

5. CGHS beneficiaries are urged to make optimal usage of the LAC and ZAC for redressal of their issues and grievances.

This issues with the approval of the Competent Authority.



No. A-27012/01/2022-Estt.(AL) Government of India, Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions, Department of Personnel & Training dated 17/02/23

Subject: Reimbursement of Children Education Allowance (CEA) to Central Government servants having Divyang Children.

In continuation of this Department's O.M. No. A-27012/02/2017-Estt.(AL) dated 17.07.2018 for payment of Children Education Allowance to Central Government servants, it has been decided to expand the scope of Children Education Allowance for the educational need of Divyang children who are unable to attend school, physically under the following conditions:

(i) In a case where Divyang Child is not able to attend school, the reimbursement of CEA for availing education / special education at residence, shall be made at double the normal rates of CEA as prescribed under para 2(d) of O.M. No. A-27012/02/2017-Estt.(AL) dated 17.07.2018. the reimbursement of Children Education Allowance in such cases shall be subject to production of payment receipted by teacher/instructor etc. and self-certification by the Central Government servant for availing education of their child at his/her residence.

(iii) All other terms and conditions of the OM No. A-27012/02/2017-Estt.(AL) dated 17.07.2018 shall remain same.

2. The above instructions shall come into effect from 17.02.2023. ☐

Addl Dte Gen of Manpower&Plg, ' MP-4(Civ)(B), Adjutant General's Branch, IHQ of MoD (Army) 15902/AO/MP-4 (Civ) (B) dated 02/03/23

Subject: Forwarding of applications for Posting / transfer on compassionate grounds or on mutual basis In respect of defence civilian employees

1. Reference this office letter of even No, dated 18 Nov 2019, 06 Jan 2021, 31 Mar 2022 and SOP issued vide this office Note of even No dated 14 Sep 2020 on the above subject.

2. It has been brought to the notice of the undersigned in the Steering Committee Meeting of AHQ JCM Level-III Council held on 17 Feb 2023 that applications for posting/transfer on compassionate grounds/mutual basis are not being processed by some Units in accordance with the SOP issued vide this office letter dated 14 Sep 2020.

3. It may be appreciated that non-compliance of the

instructions issued by this office would defeat the welfare measure formulated for low paid Gp 'C' defence civilians employees. The JCM members have also express their concern in this regard.

4. In view of the above, it is once again reiterated that the provisions contained in the AO 12/2020/MP-4 as well as the instructions issued vide SOP are complied with both in letter and spirit. It is requested that suitable instructions to all units/ests under the control of the respective Line/Controlling Dtes be issued for strict compliance. ☐

*No. 01(01)/2010/D(Civ-II) Government of India
Ministry of Defence (Department of Defence)
D(Civ-II) dated 20/03/23*

Subject: Maternity Leave to Defence Civilian female Industrial Employees governed by the Factories Act, 1948 as per Maternity Benefit (Amendment) Act, 2017

The undersigned is directed to say that Ministry of Law and Justice vide their Gazette Notification dated 28.03.2017 has amended Maternity Benefit Act, 2017 wherein inter-alia benefit of 26 weeks of Maternity Leave has been provided. The matter regarding applicability of the Amendment Act to the Defence Civilian Female Industrial Employees governed by the Factories Act, 1948 had been under consideration in this Ministry in consultation with Ministry of Labour and Employment.

2. Subsequently, Ministry of Labour and Employment vide OM dated 07.09.2022 has clarified as under: -

"The Maternity Benefit Act, 1961, under its Section 2(1)(a), applies to establishment including a Factory. Under Section 3(f) of the said Act, Factory means a Factory as defined in clause(m) of Section 2 of the Factories Act, 1948(63 of 1948). In view of applicability of the Maternity Benefit Act, 1961 on Factory also, the provisions of the Act as amended from time to time shall also apply on female worker of the Factory. Accordingly, Female Industrial Employees governed by the Factories Act, 1948 are entitled for the quantum of enhanced maternity leave by the Maternity Benefit (Amendment) Act, 2017."

3. The above clarification of M/o Labour and Employment is circulated to all concerned organisations/establishments governed by the Factories Act, 1948 for compliance/ implementation.

4. Accordingly, the benefit of 26 weeks of Maternity Leave shall be applicable from the date of issue of this letter i.e. 20.03.2023. Those women employees who had already availed 12 weeks of maternity leave before

the date of issue of this letter shall not be entitled to avail the extended benefit of the 26 weeks to Further, enhanced maternity benefit shall be extended to Defence Civilian Female Industrial employees who are already under maternity Leave at the time of issue of this letter.

5. This issues with the cooccurrence of Ministry of Defence (Finance) vide their I.D. No. 13013/06/2022-D(AG/PBIFin) dated 02.03.2023.

□

F.No.3 1011/06/ 2023-Estt.(A-IV), Government of India, Ministry of Personnel, Public Grievances & Pensions, Department of Personnel & Training, Establishment A-III Desk dated 29/03/23

Subject: Central Civil Services (Leave Travel Concession) Rules, 1988 — Fulfilment of procedural requirements

The undersigned is directed to refer to the above mentioned subject and to state that Government employees are allowed to encash 10 days earned leave at the time of availing of LTC to the extent of 60 days during the entire service. However, certain queries have been raised about whether to allow reimbursement of leave encashment or not in cases where the Government employees undertake journeys on private vehicles in areas connected by public transport or the Government servant himself decides to forgo his claim resulting in 'Nil' claim on journeys performed.

2. The matter has been considered and decided that since the leave encashment is limited upto 60 days in the entire service, the denial of encashment of leave would not be appropriate in such cases where the Government employee decides to forgo his claim of reimbursement for travel undertaken on private/hired vehicle or his claim is 'Nil', provided that:

(i) A Government employee intimates to the Department his intention to avail of LTC in advance and gets the leave sanctioned as per the prescribed procedure before the journey is undertaken;

(ii) The Government employee has submitted a request for leave encashment before the commencement of the journey;

(iii) The Government employee gives a self-declaration that he has actually travelled to the declared place of visit and is not claiming the fare reimbursement for the entire LTC journey.

3. It is further clarified that in the following cases, the Government employees are not required to forgo the fare-reimbursement for LTC Journey as per prevailing instructions:

(i) The Journey on LTC is made by taxi, auto-rickshaw etc, only between places not connected by rail and these modes operate on a regular basis from point to point with the specific approval of the State Governments/transport authorities concerned and are authorized to ply as public carriers;

(ii) Where a Government servant travels on LTC upto the nearest airport/railway station/ bus terminal by authorized mode of transport and undertakes the rest of the journey to a declared place of visit by private transport! own arrangement (such as personal vehicle or private taxi, etc.), limited upto 200 KMs to and fro;

(iii) When the Head of Department allows the use of own/hired taxi for an LTC journey on account of the disability of the Government servant or dependent family member as per the extant instructions.

4. It is also reiterated that, within the same block, when the LTC is being availed of by the Government servant and his family members separately, encashment of leave would be restricted to one occasion only.

5. Hindi version will follow.

□

No. 57/05/2021-P&PW(B) Government of India, Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions, Department of Pension and Pensioners Welfare dated 03/03/23

Subject: Coverage under Central Civil Services (Pension) Rules, in place of National Pension System, of those Central Government employees who were recruited against the posts/vacancies advertised /notified for recruitment, on or before 22.12.2003.

The undersigned is directed to say that consequent on introduction of National Pension System (NPS) vide Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) Notification No. 5/7/2003-ECB & PR dated 22.12.2003, all Government servants appointed on or after 01.01.2004 to the posts in the Central Government service (except armed forces) are mandatorily covered under the said scheme. The Central Civil Services (Pension) Rules, 1972 and other connected rules were also amended vide Notification dated 30.12.2003 and, after the said amendment, those rules are not applicable to the Government servants appointed to Government service after 31.12.2003.

2. Subsequently, Department of Pension and Pensioners' Welfare in consultation with the Department of Personnel & Training, Department of Expenditure and Department of Legal Affairs in the light of the various representations/references and decisions of Hon'ble Courts, issued instructions vide OM No.

57/04/2019-P&PW(B) dated 17.02.2020 giving one time option to Central Government employees who were declared successful for recruitment in the results declared on or before 31.12.2003 against vacancies which occurred before 01.01.2004 and were covered under the National Pension System on joining service on or after 01.01.2004, to be covered under the CCS(Pension) Rules, 1972 (now 2021). There was fixed time schedule for different activities under the aforesaid OM dated 17.02.2020.

3. Representations have been received in this Department from the Government servants appointed on or after 01.01.2004 requesting for extending the benefit of the pension scheme under Central Civil Services (Pension) Rules, 1972 (now 2021) on the ground that their appointment was made against the posts/vacancies advertised/notified for recruitment prior to notification for National Pension System, referring to court judgments of various Hon'ble High Courts and Hon'ble Central Administrative Tribunals allowing such benefits to applicants.

4. The matter has been examined in consultation with the Department of Financial Services, Department of Personnel & Training, Department of Expenditure and Department of Legal Affairs in the light of the various representations/references and decisions of the Courts in this regard. It has now been decided that, in all cases where the Central Government civil employee has been appointed against a post or vacancy which was advertised/notified for recruitment/appointment, prior to the date of notification for National Pension System i.e. 22.12.2003 and is covered under the National Pension System on joining service on or after 01.01.2004, may be given a one-time option to be covered under the CCS(Pension) Rules, 1972 (now 2021). This option may be exercised by the concerned Government servants latest by 31.08.2023.

5. Those Government servants who are eligible to exercise option in accordance with para-4 above, but who do not exercise this option by the stipulated date, shall continue to be covered by the National Pension System.

6. The option once exercised shall be final.

7. The matter regarding coverage under the CCS (Pension) Rules, 1972 (now 2021), based on the option exercised by the Government servant, shall be placed before the Appointing Authority of the posts for which such option is being exercised for consideration, in accordance with these instructions. In case the Government servant fulfills the conditions for coverage under the CCS (Pension) Rules, 1972 (now 2021), in accordance with these instructions, necessary order in this regard shall be issued latest by 31st October, 2023.

The NPS account of such Government servants shall, consequently, be closed w.e.f. 31st December, 2023.

8. The Government servants who exercise option to switch over to the pension scheme under CCS (Pension) Rules, 1972 (now 2021), shall be required to subscribe to the General Provident Fund (GPF). Regarding account of the corpus in the NPS account of the Government servant, Controller General of Accounts (CGA) has furnished the following clarification vide letter No. 1(7)(2)/2010/cia/TA III/390 dated 14.1.2019 & LD. Note No. TA-3-6/3/2020-TA-III/cs-4308/450 dated 23.12.2022:

- (i) Adjustment of Employees' contribution in Accounts: Amount may be credited to individual's GPF account and the account may be recasted permitting up-to-date interest (Authority-FR-16 & Rule 11 of GPF Rules).
- (ii) Adjustment of Government contribution under NPS in Accounts: To be accounted for as (-) Dr. to object head 70 - Deduct Recoveries under Major Head 2071 - Pension and other Retirement benefit - Minor Head 911- Deduct Recoveries of over payment (GAR 35 and para 3.10 of List of Major and Minor Heads of Accounts).
- (iii) Adjustment of increased value of subscription on account of appreciation of investments — May be accounted for by crediting the amount to Govt. account under M.H. 0071- Contribution towards Pension and Other Retirements Benefits 800- Other Receipts (Note under the above Head in LMMHA).

9. All Ministries/Departments are requested to give wide publicity to these orders without fail. The cases of those Government servants who fulfill the conditions mentioned in this O.M. and who exercise option to switch over to the pension scheme under CCS (Pension) Rules, 1972 (now 2021) may be settled by the administrative Ministries/Departments in accordance with these orders.

10. This issues in consultation with Ministry of Finance, Department of Expenditure vide ID Note No. 1(7)/EV/2019 dated 05.12.2022 & 07.02.2023 and in consultation with Controller General of Accounts vide their I.D. Note No. TA-3-6/3/2020-TA-III/cs-4308/450 dated 23.12.2022.

11. In so far as the persons serving in the Indian Audit and Accounts Department are concerned, these orders are issued in consultation with Comptroller and Auditor General of India, as mandated under Article 148(5) of the Constitution of India.

12. Hindi version will follow.





नेवल डाक यार्ड मुंबई आर. आर. के. एस. यूनियन के वर्क्स कमेटी चुनाव में भा. प्र. म. संघ के विजयी प्रत्याशी।



स्माल आर्म्स फैक्टरी कानपुर में को-आपरेटिव सोसायटी के चुनाव में भा. प्र. म. संघ के विजयी प्रत्याशी

आयुध कर्मचारी संघ आयुध निर्माणी भंडारा

की ओर से अपना पैनल के
विजई उमेदवारों को
हार्दिक बधाई



17

इंद्रपाल बोंदे



11

ओमप्रकाश धुर्वे



2

योगेश झंझाड



4

विजय मडामे



6

दिपक डोलारे



1

सौ. जयश्री आकरे



सी. ओ. डी. कानपुर में को-आपरेटिव सोसायटी के चुनाव में भा. प्र. म. संघ के विजयी प्रत्याशी



आयुध निर्माणी वरणांव, महाराष्ट्र में दिनांक 18 मार्च, 2023 को
आयुध निर्माणी दिवस मनाते हुए भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ के कार्यकर्ता



दिनांक 26 मार्च 2023 को रायपुर, देहरादून में भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं के संयुक्त वार्षिक अधिवेशन में श्री साधू सिंह एवं श्री वीरेन्द्र शर्मा जी व अन्य पदाधिकारी सम्मिलित हुए।

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें इस पते पर भेजिये।

If undelivered please return to :

"Pratiraksha Bharti"

C/o. Bharatiya Pratiraksha Mazdoor Sangh
2, Naveen Market, Kanpur - 208 001

Mob. : 9450153677, Tel./Fax : 0512-2332222

Website : www.bpms.org.in

E-mail : gensecbpms@yahoo.co.in, cecbpms@yahoo.in

बुक पोस्ट

Publisher and Owner : Bhartiya Pratiraksha Mazdoor Sangh, 2 Naveen Market, Kanpur-208001

Printed at Chhaya Press 8/208, Arya Nagar, Kanpur-208002 • Mob. : 9839223650